FOLKLORE

A FEMINIST EXPRESSION

Edited by :

Dr. Rashmi Rajpal Singh

Scanned by CamScanner

लोक उत्सव व महिलाओं की संस्कृति चेतना

✍ डॉ. सुनिता बोहरा

लोकोत्सव का मुख्य उद्देश्य जनता में स्फूर्ति का संचार करना होता है। ये सम्बन्धित देश या प्रांत की संस्कृति के प्रतीत होते हैं। प्रत्येक लोकोत्सव के साथ कोई न कोई धार्मिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक विचारधारा रहती है। प्रत्येक लोकोत्सव की उत्पति किसी अवसर विशेष पर, जन-समूह द्वारा प्रकट हुए आनन्दोल्लास हुई होती है। ऐसे आनन्दोल्लास किसी महापुरुष के जन्म, विवाह, विजय, नई फसल के पकने, ऋतु परिवर्तन, विशेष घटना के कारण होते हैं।

जोधपुर को राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि मरुभूमि के हृदय स्थल पर बसे इस क्षेत्र में पूरे वर्ष पर्व, अनुष्ठान, मेले आदि की धूम मची रहती है। चैत्र माह से लेकर फागुन तक अलग-अलग ऋतुओं में मनाए जाने वाले त्यौहर इत्यादि का चक्र चलता रहता है। इसकी गतिशीलता में जनजीवन में नवीनता का संचार होता है और इसकी नवीनता हर एक के मन को तरंगों में भर देती है।

कहा जाता है कि महिलाएं संस्कृति की सर्वश्रेष्ठ संवाहक तथा संरक्षक होती हैं। रहन-सहन, रीति-रिवाज, मांगलिक अनुष्ठान धर्म-त्यौहारादि मनाने का सीधा सम्बन्ध महिलाओं से ही है। क्षेत्र की सांस्कृतिक उत्कृष्टता तथा यहां के महिला वर्ग में इन सभी के प्रति रूझान व निष्ठा को देखते हुए इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि यहां का महिला वर्ग संस्कृति के विशाल वृक्ष को अभिसिंचित कर रहा है और इसीलिए गाया जाता है -

सोना सरीखी है धणा पीलीरी ओ राज
ढोला राखो नीं थारै हिवड़े रे मांय
परभातै सिधाज्यौ आलीजा चाकरी रेवौ नी आजूंणी रात
रूपा सरीखी आ थारी धणा ऊजळी ओ राज
राज ढोला राखौ नीं आपरी मूठी रे मांय
परभातै सिधाज्यौ...

Scanned by CamScanner

जोधपुर को राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि मरूभूमि के हृदय स्थल पर बसे इस क्षेत्र में पूरे वर्ष पर्व, अनुष्ठान, मेले आदि की धूम मची रहती है। चैत्र माह से लेकर फागुन तक अलग-अलग ऋतुओं में मनाए जाने वाले त्यौहार इत्यादि का चक्र चलता रहता है। इसकी गतिशीलता में जनजीवन में नवीनता का संचार होता है और इसकी नवीनता हर एक के मन को तरंगों में भर देती है।

प्रत्येक पर्व या मेले की एक अलग ही पहचान है। वैसे तो पूरा क्षेत्र इन उत्सवों में शरीक होता है मगर महिलाओं की तो मुख्य भूमिका होती है। आधुनिकता की दौड़ में शामिल होने के बाद भी इस वर्ग ने अपनी संस्कृति के प्रति मोहभंग नहीं होने दिया। वर्तमान में तो संस्कृति के विभिन्न आधारों के प्रति रूझान बढ़ा ही है। मांगलिक अवसर या त्यौहारादि पर गीत गाना, मांडणे बनाना और अपने-अपने परम्परागत रीति-रिवाजों का पालन करना, बावजूद पाश्चात्य संस्कृति के प्रसार के, किशोरियों को भी भाता है। इसका श्रेय नारी वर्ग को ही जाता है, क्योंकि संस्कृति की यह थाती एक पीढ़ी आने वाली पीढ़ी को इसी रूप में सौंपती है।

गणगौर की तीज हो या कजरी तीज, सुहागिनें जहां अपने अखण्ड सुहाग की कामना करती हैं, वही कन्याएं योग्य वर की कामना करते हुए बड़ी श्रद्धा से पूजन आदि करती हैं। लगभग एक पखवाड़े तक चलने वाले इस त्यौहार की रौनक पूरे क्षेत्र में देखी जा सकती है, व्रत रखने वाली महिलाएं इन दिनों सज-धज कर रहती हैं। परम्परागत वेशभूषा 'घाघरा-ओढ़नी' से सजी महिलाओं में उमंग और उत्साह का ज्वार भी उमड़ पड़ता है। इन अवसरों पर महिलाओं के झुण्ड के झुण्ड गीत गाते हुए देखे जा सकते हैं। अपने पति से गणगौर पूजन की अनुमति लेते हुए गाती हैं -

'भँवर म्हाने पूजण दो गिणगौर'
खेलण दो गणगौर, भँवर म्हाने पूजण दो गिणगौर
हो, जी म्हारी सहल्या जोवे छे बाट
बिलाला म्हाने पूजन दो गिणगौर
मल खैलो गणगौर सुन्दर गौरी मल पूजौ गिणगौर
हो जी थानै देवे लाडल पूत अवस प्यारी मल खेलो गणगौर
माथै वे मैमद लाव भंवर म्हारै माथे वे मेमद लाव
हो जी म्हारी रखड़ी रतन जड़ाय भँवर म्हाने खेलण दो गणगौर।

पेड़ों पर झूले पड़ जाते हैं, बाग-बगीचों में बड़ी चहल-पहल हो जाती है। सावन के सोमवार व हरियाली अमावस्या को तो नगर के उद्यानों की शोभा में चार चांद लग जाते हैं जब रंग बिरंगी पौशाकों में महिलाएं सपरिवार प्रकृति की गोद में बैठकर इस ऋतु का आनन्द लेती हैं। नाना प्रकार के व्यंजन बनाना और हरियाली में बैठकर बड़े चाव से भोजन करना यहां की परम्परा रही है।

वीरपुरी, रक्षा-बंधन आदि भाई-बहन के प्रेम के प्रतीक त्यौहारों के प्रति भी बड़ा

Scanned by CamScanner

उत्साह देखा जाता है। नगर में चारों ओर रंग-बिरंगे वस्त्राभूषणों से सुसज्जित महिलाओं को देखकर ही इस बात का पता चल जाता है कि आज कुछ विशेष अवसर है।

नागपंचमी, बच्छबारस आदि पर पूजन महिलाएं अपने परिवार के कल्याण व शुभ की भावना से करती हैं। ये सभी पूजनादि सामूहिक रूप से होते हैं। इन अवसरों पर इनसे सम्बन्धित कथाएं कहना-सुनना व गीत गाने का क्रम भी चलता रहता है।

गणगौर की तीज के बाद गणगौर की भोलावणी का मेला होता है जिसमें स्त्रियां भी तरह-तरह के स्वांग रचती हैं। हरियाली अमावस्या, वीरपुरी, नागपंचमी, शीतलाष्टमी आदि अवसरों पर विशाल मेले लगते हैं, जिसमें धींगा गवर का मेला विशेष महत्व रखता है। इस मेले को महिला सशक्तिकरण का पर्याय भी कहकर पुकारा जाने लगा है क्योंकि इस मेले में रात्रि में केवल और केवल महिलाओं का ही राज होता है। होली के अवसर पर पन्द्रह दिन पूर्व से ही फागुन के गीतों (लूर) के स्वर-सुनाई देने लगते हैं।

म्हारे परणियै चंग मंडायौ
काहै को घेरौ काहै की चिमटी काहै को झांझ जड़ायो
चांदी को घेरौ सोने की चिमटी, मोतीड़ा रो झांझ जड़ायो
ठुमक ठुमक रसियो नाचे बाजे चंग सवायो
साईनां संग परणियो नाचै आंगण चंग बजायौ
मैढ़ी बैठी धणा यूं बोली ओ रसियो मन भयो-म्हारे परणियै..

इन सभी पर्वों, अनुष्ठानों को मनाने में महिलाओं की महत्ती भूमिका रहती है। पर्व के पूर्व की तैयारी उस अवसर पर घरों में मांडणे आदि बनाना, विशेष व्यंजन बनाना, कथा कहना, गीत गाना आदि महिलाओं के ही कार्य है और इस क्षेत्र में यह सब कुछ देखा जा सकता है।

अवसर विशेष से सम्बन्धित पकवान बनाने का रिवाज आज भी है। आखा तीज पर खीच व गलवाणी, काजली तीज पर सत्तू, बच्छबारस पर 'बाजरे की रोटी' (सोगरा) व मोठ की सब्जी हो या फिर शीतलाष्टमी पर ठंडे भोजन में पचकूटे की सब्जी (केर सांगरी) व राब बड़े चाव से बनाए व खाए जाते हैं।

अपनी परम्परागत वेशभूषा घाघरा-ओढ़नी के प्रति यहां की महिलाओं में बड़ा चाव है। फागण में फागणिया तो सावण में लहरिया ओढ़कर अपनी मन की भावनाओं को अभिव्यक्ति देती प्रतीत होती हैं।

सांवरियै रौ हींडो रै बांधणा जाय
मादवियै रौ हींडो रै बांधणा जाय
हींडो रे बांधणा धणा गई रे
सात सहेल्यां रे साथ
बांध बंधाय पाछी वळी रे
दिवलौ तो दासी रै हाथ

Scanned by CamScanner

हींडों तो बड़ले री साख सूं रे
रेसम री तणियांह
म्है ने बालम हीडसा
गळ दे रे बांवड़ियांह
घूम घूमळौ घाघरौ रे
ओढ़णा दिखणी चीर
चूड़लो तो हाती दांत रौ
आयौ रे नणदी रौ बीर

कहा जाता है कि महिलाएं संस्कृति की सर्वश्रेष्ठ संवाहक तथा संरक्षक होती हैं। रहन-सहन, रीति-रिवाज, मांगलिक अनुष्ठान धर्म-त्योहारादि मनाने का सीधा सम्बन्ध महिलाओं से ही है। क्षेत्र की सांस्कृतिक उत्कृष्टता तथा यहां के महिला वर्ग में इन सभी के प्रति रूझान व निष्ठा को देखते हुए इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि यहां का महिला वर्ग संस्कृति के विशाल वृक्ष को अभिसिंचित कर रहा है और इसीलिए गाया जाता है -

सोना सरीखी है घणा पीलीरी ओ राज
ढोला राखौ नीं थारै हिवड़े रे मांय
परभातै सिधाज्यौ आलीजा चाकरी रेवौ नी आजूंणी रात
रूपा सरीखी आ थारी घणा ऊजळी ओ राज
राज ढोला राखौ नीं आपरी मूठी रे मांय
परभातै सिधाज्यौ...

लोकोत्सव का मुख्य उद्देश्य जनता में स्फूर्ति का संचार करना होता है। ये सम्बन्धित देश या प्रांत की संस्कृति के प्रतीत होते है। प्रत्येक लोकोत्सव के साथ कोई न कोई धार्मिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक विचारधारा रहती है। प्रत्येक लोकोत्सव की उत्पति किसी अवसर विशेष पर, जन-समूह द्वारा प्रकट हुए आनन्दोल्लास द्वारा हुई होती है। ऐसे आनन्दोल्लास किसी महापुरुष के जन्म, विवाह, विजय, नई फसल के पकने, ऋतु परिवर्तन, विशेष घटना के कारण होते हैं। लोकोत्सव को तीन भागों में बांटा जा सकता है -

(1) होली, गणगौर, तीज, रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, दीपावली, शिवरात्रि, रामनवमी, मोहर्रम आदि त्यौहार।

(2) रामनवमी, हनुमान जयन्ती, महावीर जयन्ती, जन्माष्टमी, बुद्ध जयन्ती, ईसा जयन्ती, नानक जयन्ती आदि सामाजिक, धार्मिक व ऐतिहासिक उत्सव।

(3) गोगामेढ़ी, कोलायत, मुकाम, बाणेश्वर, बाणगंगा केलादेवी, महावीरजी, तिलवाड़ा, पुष्कर, रामदेवरा, गलिया कोट, अजमेर आदि धार्मिक, ऐतिहासिक व प्राकृतिक स्थानों पर लगने वाले मेले।

कभी-कभी त्यौहारों, उत्सवों तथा मेलों- तीनों का अथवा इनमें से दो का सम्मिलित

Scanned by CamScanner

लोकोत्सव भी होता है। इन लोकोत्सवों पर स्त्री- पुरुष व बच्चे स्वच्छ एवं सुन्दर वेश-भूषा धारण कर, गहने पहनकर, मीठे स्वादिष्ट भोजन करते हैं, गीत गाते हैं व नृत्य करते हैं। धार्मिक उत्सवों पर स्त्री-पुरुष व्रत रखते हैं। घर के आंगनों व द्वारों पर मांडने अंकित करते हैं। स्त्रियां व लड़कियां हाथों और पैरों में मेहन्दी लगाती हैं तथा उन्हें चित्रित करती हैं। कई स्थानों पर खेल, तमासे व क्रीडाएं होती हैं। इस प्रकार लोकोत्सव पर जन-मानस वीरता, श्रृंगार और भक्ति की त्रिवेणी का पूर्ण आनन्द उठाता है।

राजस्थान के त्यौहारों का अपना अलग इतिहास है। प्रत्येक त्यौहार के पीछे लोगों की भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियां तथा धारणाएं हैं। कई त्यौहार भारत के सभी प्रांतों में मनाये जाते हैं, यथा - बसंत पंचमी, होली, रक्षा बन्धन, जन्माष्टमी, दीपावली, मोहर्रम, तीज आदि। यहां के त्यौहार स्त्री-पुरुष सम्मिलित रूप से मनाते हैं लेकिन इनमें महिलाएं विशेष रूचि लेती हैं। बिना महिलाओं के सहयोग के ये त्यौहार फीके से प्रतीत होते हैं।

✦ *समाज शास्त्र विभाग*
महिला पीजी महाविद्यालय
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राज.)

संदर्भ सूची—

(1) महात्मा फुले सत्य शोधक संस्थान, जोधपुर
(2) महिला चेतना का उदय - डॉ. के.एस. सक्सेना
(3) जागरूक महिला विकास समिति, जोधपुर
(4) जोधपुर महिला समाज - डॉ. सुखबीरसिंह गहलोत, डॉ. रामसिंह गहलोत
(5) संभावना - पत्रिका
(6) भारत की सांस्कृतिक विरासत - डॉ. रामसिंह सोलंकी

❑❑❑

Scanned by CamScanner